शीर्षक :

"मऊ जनपद में यू 0 पी 0 बोर्ड के माध्यमिक विद्यालय के लड़के एवं लड़कियों के बीच सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन"

लेखक : 1- खडानन जी भावेश, शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग
निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर ।
2- प्रोफेसर डॉक्टर तनु टंडन, शिक्षा संकाय
निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर ।

सारांश :

सृजनात्मकता मानसिक योग्यता के साथ एक नवीन विचार है । जो किसी व्यक्ति के जीवन से जुड़ी सभी तरह की समस्याओं का नवीनतम और असाधारण समाधान खोजता है । यह मानव मस्तिष्क में उठने वाले विभिन्न कल्पनाओं ,विचारों का वास्तविक धरातल पर साकार रूप देने की वास्तविक योग्यता है । इस योग्यता के माध्यम से किसी नवीन विचारों या वस्तु को प्रस्तुत किया जाता है । वर्तमान समय में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की आवश्यकता को महसूस किया जा सकता है । शिक्षा का क्षेत्र भी इसकी आवश्यकता से अछूता नहीं रहा है अतः निरंतर प्रगति और विकास के लिए सभी पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले छात्रों का विकास के सभी पक्षों के साथ -साथ रचनात्मक योग्यता का विकास किया जाना अति आवश्यक है । प्रस्तुत शोध का उद्देश्य मऊ जिले के यू0 पी0 बोर्ड के बारहवीं के लड़के एवं लड़कियों के बीच सृजनात्मकता का पता लगाना है । अध्ययन में मऊ जिले के यूपी बोर्ड के कक्षा 12 के विद्यालयों से 50 लड़के एवं 50 लड़कियों को न्यायदर्श के रूप में साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया । इसमें शोधार्थी ने शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है । चयनित न्यायदर्श के मापन के लिए विख्यात भारतीय मनोवैज्ञानिक बाँकर मेहदी द्वारा निर्मित शाब्दिक सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का प्रयोग उपकरण के रूप में करते हुए जाँच से प्राप्त आकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मानक विचलन ,माध्य एवं टी-परीक्षण का प्रयोग हुआ है । जांच में पाया गया कि यू0 पी0 बोर्ड के लड़के व लड़कियों में सृजनात्मकता के विभिन्न आयामों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया सिवाय मौलिकता को छोड़कर । इन्हीं बातों को ध्यान देते हुए भावी अध्ययन के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं ।

सूचक शब्द : सृजनात्मकता ,माध्यमिक विद्यालय ,यू 0 पी 0 बोर्ड,रचनात्मकता, मऊ जिला ।

प्रस्तावना :

सृजनात्मकता या रचनात्मकता अंग्रेजी के 'क्रीएटिवटी' शब्द का हिन्दी रूपांतरण है,इसका अन्य शाब्दिक अर्थ मौलिकता ,प्रवाहता ,विविधता तथा विस्तारण होता है जिसे रचनात्मकता के तत्व ,घटक ,या आयाम

भी कहा जाता है। सामान्य अर्थ में इन्ही चारों घटकों का सम्मिलित स्वरूप सृजनात्मकता कहलाता है । इन्हीं आयामों की उपस्थिति के आधार पर किसी किसी व्यक्ति को रचनात्मक व्यक्ति कहा जाता है । यद्यपि रचनात्मकता मानसिक योग्यता होती है जो नए खोज एवं अविस्कार को जन्म देती है । संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपनेआप में अद्भुत होता है ,बस फर्क इतना है कि किसी में रचनात्मक योग्यता कम तो किसी में ज्यादा होती है । यह व्यक्ति को सामान्य व्यक्तियों से अलग तथा अनोखा बनाती है । रचनात्मक व्यक्ति के विभिन्न क्षेत्रों में किए जाने वाले कार्य इनकी रचनात्मकता को प्रकट करते है ,इनके कार्य नवीन ,बहूपयोगी ,एवं असाधारण होते हैं । इनकी निपुणता भिन्न भिन्न क्षेत्रों में हो सकती है जैसे -कला ,साहित्य ,विज्ञान ,सामाजिक क्षेत्र ,राजनैतिक क्षेत्र इत्यादि । रचनात्मक योग्यता के इन्हीं कौशलों के कारण व्यक्ति अपने - अपने क्षेत्रों में समाज ,देश ,के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान करता है ।

मनोवैज्ञानिक कोल व ब्रूस के अनुसार - "सृजनशीलता मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने ,व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता व क्रिया है । "

अर्थात सृजनशीलता का संबंध मुख्य रूप से मौलिकता या नवीनता से होता है जो किसी समस्या पर नवीन ढंग से सोचने व समाधान खोजने योग्य बनाती है ।

वर्तमान युग की माँग है कि व्यक्ति ,समाज एवं राष्ट्र के बेहतर भविष्य के लिए प्रत्येक बच्चे को अपने रचनात्मक योग्यता के विकास के लिए उचित अवसर प्राप्त होना चाहिए जिससे सृजनात्मक शक्ति का उपयोग अपनी क्षमता के अनुसार समस्या के निराकरण में कर सके तथा इसके लिए सक्षम बन सके । इसलिए जरूरी है कि हमारे देश का भविष्य कहे जाने वाले बच्चे तथा आने वाली पीढ़ी को अधिक से अधिक सृजनात्मक बनाने में हमसब सहयोग करें ।

आवश्यकता एवं महत्व :

प्राचीन काल से यह अवधारणा प्रचलित थी कि रचनात्मकता जन्मजात होती है इसे जन्म के बाद किसी भी प्रकार से अर्जित नहीं किया जा सकता है ,ऐसा भारतीय दर्शन में भी वर्णन देखने को मिलता है जिसमे कहा गया है कि किसी व्यक्ति का सृजनशील होना या न होना पूर्णतया ईश्वर की कृपा दृष्टि पर निर्भर करता है ,जो पूर्णतया सत्य नहीं है । वर्तमान समय में इस तरह की मिथ्या से पर्दा उठ चुका है ,आज विभिन्न अनुसंधान कार्यों से स्पष्ट हो चुका है कि रचनात्मकता को जन्म के बाद शिक्षा द्वारा अर्जन एवं इसका विकास किया जा सकता है । इसलिए बच्चों में रचनात्मकता का विकास लड़के एवं लड़किया दोनों में किया जाना आवश्यक है क्योंकि जीवन के सभी क्षेत्रों में लड़के व लड़कियाँ समान रूप से प्रतिभाग कर रहे हैं । इस लिंग भेद से संबंधित सृजनशीलता की स्थिति का पता लगाना अति आवश्यक है ।

इस शोध के द्वारा छात्रों के रचनात्मकता के स्तर को जानकर भविष्य हेतु इनकी समस्याओं के संबंध में निर्णय लेने में मदद मिल सकेगी ,कि लिंगभेद किस स्तर तक लड़के एवं लड़कियों की रचनात्मकता के

विकास को प्रभावित करते है । जिसके आधार पर छात्रों को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा ,साथ ही साथ रचनात्मकता के विकास के लिए सर्वोत्तम प्रयास किया जा सकेगा ।

शोध का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए थे -

- यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा बारह के लड़कों की सृजनात्मकता के स्तर का पता लगाना ।
- यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा बारह के लड़कियों की सृजनात्मकता के स्तर का पता लगाना ।
- यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा बारह के लड़के व लड़कियों की सृजनात्मकता के स्तर में अंतर का पता लगाना ।

शोध परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध के लिए शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है -

- प्रवाहता के आधार पर यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा बारहवीं के लड़के एवं लड़कियों की सृजनात्मकता के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- लचीलापन या विविधता के आधार पर यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा बारहवीं के लड़के एवं लड़कियों की सृजनात्मकता के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- मौलिकता के आधार पर यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा बारहवीं के लड़के एवं लड़कियों की सृजनात्मकता के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।

साहित्य समीक्षा :

पांडे ,राजेश कुमार. (2001). ने 'आदिवासी विद्यार्थियों मे सृजनात्मकता और मूल्यों के विकास को प्रभावित करने वाले शैक्षिक कारक का परिस्थितिकीय अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया । अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च ,सामान्य एवं निम्न सुविधारहित वाले छात्रों की मूल्यों तथा सृजनात्मकता मे अंतर का पता लगाना था। इसके अतिरिक्त मूल्यों ,शैक्षिक स्थिति ,रचनात्मकता एवं अधिगम शैली के बीच संबंधों का पता लगाना था । अध्ययन मे पाया गया कि उच्च एवं सामान्य परिस्थतिकीय सुविधाविहीन वाले आदिवासी विद्यार्थियों की विस्तारण क्षमता निम्न परिस्थतिकीय सुविधाविहीन वाले विद्यार्थियों से ज्यादा थी ,वही उच्च एवं सामान्य परिस्थतिकीय सुविधाविहीन वाले आदिवासी विद्यार्थियों की मौलिकता निम्न परिस्थतिकीय सुविधाविहीन वाले विद्यार्थियों से कम थी । जबकि उच्च आदिवासी सुविधा विहीन विद्यार्थियों की मौलिकता सामान्य आदिवासी सुविधाविहीन विद्यार्थियों से कम थी । इसी तरह योग

सृजनात्मकता सबसे ज्यादा निम्न में ,उससे कम सामान्य में ,और सबसे कम उच्च परिस्थतिकीय सुविधाविहीन वाले विद्यार्थियों में पाया गया।

तिवारी ,अर्चना.(2002). ने 'पूर्वी उत्तर प्रदेश के विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता ,अभिवृत्ति ,मूल्य ,एवं व्यक्तित्व का अध्ययन किया । जिसका मुख्य उद्देश्य विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता ,अभिवृत्ति ,मूल्य ,एवं व्यक्तित्व का अध्ययन करना था। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि लिंग भेद व क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण और शहरी विकलांग बालक,बालिकाओ की सृजनात्मकता मे कोई सार्थक अंतर नहीं था ,इसी तरह लैंगिक भेद व क्षेत्र के आधार पर सामान्य ग्रामीण एवं शहरी बालक ,बालिकाओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं था। जबकि शहरी व ग्रामीण विकलांग बालक ,बालिकाओं की सृजनात्मकता मे कोई सार्थक अंतर नहीं था। क्योंकि वर्तमान समय में ग्रामीण एवं नगरीय दोनों विद्यालयों मे सामान्य एवं विकलांग ,बालक बालिकाओं को एकसाथ समिमिलित रूप से समान शिक्षा प्रदान की जा रही है। जिससे सामान्य छात्रों की तरह विकलांग छात्र की तरह सृजनात्मक चिंतन करने में सक्षम हुए।

सिंह,अनीता. (2002). ने 'उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी समस्या समाधान की योग्यता , बुद्धि और सामाजिक आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन' पर शोध किया जिसमे ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के छात्रों की सृजनात्मकता उनके सामाजिक आर्थिक स्तर को सार्थक रूप से प्रभावित की है। जबकि मध्यम ,निम्न व ग्रामीण छात्रों की सृजनात्मकता उनके सामाजिक आर्थिक स्तर से प्रभावित नहीं हुआ। किन्तु उच्च ,मध्यम व निम्न शहरी छात्रों की सृजनात्मकता उनके सामाजिक आर्थिक स्तर से प्रभावित हुआ।

पासी . (1972). ने शहरी छात्रों को ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सृजनात्मक बताया। गुप्ता. (1988) और अफ़सान (1991) ने ग्रामीण छात्रों में नगरीय छात्रों की तुलना में अधिक सृजनात्मकता होती है ऐसा शोध में पाया।

सिंह,लवकुश .(2009). ने ' सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की बुद्धि ,स्मृति एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन'विषय पर शोध किया। शोध में पाया गया कि सामान्य व आरक्षित वर्ग के छात्रों की बुद्धि ,सृजनात्मकता व स्मृति मे कोई सार्थक अंतर नहीं था।

कुमार ,अजय.(2002). के द्वारा शोध में पाया गया कि विभिन्न तहसीलो के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्मबोध , सृजनात्मकता ,उपलब्धि प्रेरणा मे कोई सार्थक अंतर नहीं था। इसी तरह शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी कोई सार्थक अंतर नहीं मिला।

शर्मा ,एकता.,शर्मा,संदीप.(2018). ने 'शिक्षकों के लिए रचनात्मकता पोषण व्यवहार पैमाना' विषय पर शोध किया । जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक की रचनात्मकता के पोषण व्यवहार का मापन के पैमाने का विस्तार करना था । शोध में पाया गया कि परिणाम गुप्त चर के साथ माडल को अच्छी तरह प्रदर्शित करता है ।

शोध का परिसीमन :

किसी भी शोधकार्य को कितनी ही गहनता से ही क्यों न किया गया हो ,लेकिन जबतक इसे निश्चित क्षेत्र में सीमांकित नहीं किया जाता तबतक शोधकार्य विश्वसनीय नहीं हो पाता है । अतः प्रस्तुत शोध को निम्न रूप से सीमांकित किया गया है -

- प्रस्तुत शोध में मऊ जनपद को लिया गया है ।
- जनसंख्या के रूप में मऊ जनपद के कक्षा बारह के लड़के एवं लड़कियों को लिया गया है ।
- प्रस्तुत शोध में में यू0 पी0 बोर्ड के छात्रों को लिया गया है ।
- अध्ययन में कुल 100 विद्यार्थियों को न्यायदर्श के रूप में लिया गया है ।
- अध्ययन में 50 लड़के व 50 लड़कियों को न्यायदर्श के रूप में लिया गया है ।
- अध्ययन में उपकरण के रूप में बाँकर मेहदी के शाब्दिक सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का प्रयोग किया गया है ।
- शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

शोध की कार्यप्रणाली :

अध्ययन विधि : प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में मऊ जिले के यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा 12 के बालक बालिकाओ को शामिल किया गया है ।

न्यायदर्श :

अध्ययन में मऊ जिले के यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा 12 के 50 बालक व 50 बालिकाओं को साधारण यादृच्छिक विधि से चुनाव किया गया है । शोध में समान आयु ,के तथा समान सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों को लिया गया है। इस तरह कुल 100 न्यायदर्श का चुनाव किया गया ।

अध्ययन के उपकरण :

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधार्थी द्वारा माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों (लड़के व लड़कियाँ) में सृजनात्मकता के मापन के लिए बाँकर मेहदी के शाब्दिक सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का प्रयोग किया गया है । इस

परीक्षण में लड़के व लड़कियों में सृजनात्मकता के मापन के लिए निम्न कार्यों या उपपरिक्षणों को शामिल किया गया है -

- परिणाम सोचो परीक्षण।
- असामान्य उपयोग परीक्षण।
- वस्तु सुधार परीक्षण।
- नवीन संबंध खोजों परीक्षण।

उपरोक्त परीक्षणों से मापन के लिए कुल 48 मिनट का समय निर्धारित किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण :

प्रस्तुत शोध में न्यायदर्श से के मापन से प्राप्त आकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मानक विचलन ,माध्य तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं परिचर्चा :

कक्षा 12 के लड़के एवं लड़कियों के औसत अंकों के बीच अंतर के महत्व की जाँच शाब्दिक रचनात्मकता के आयामों में से प्रत्येक के लिए की गई थी-

- प्रवाहता।
- विविधता या लचीलापन।
- मौलिकता।

निम्न तालिका के विश्लेषण से महत्वपूर्ण परिणाम निकल कर सामने आए -

तालिका –

चर	लड़के N =50		लड़कियाँ N =50		टी - वैल्यू	सार्थकता का स्तर
	माध्य	SDS	माध्य	SDS		
प्रवाहता	36.56	10.30	36.26	12.70	0.10	NS
लचीलापन	30.60	6.80	31.60	7.00	0.50	NS
मौलिकता	6.70	8.00	5.00	6.25	2.12	0.01
कुल रचनात्मकता	72.20	20.11	70.90	25.12	0.16	NS

जैसा की तालिका में देखा जा सकता है कि प्रवाहता के मापन पर लड़कों एवं लड़कियों के औसत अंक 36.56 और 10.30 पाए गए और उनके अनुरूप SDS क्रमशः 10.30 और 12.70 पाए गए। टी वैल्यू का मान 0.10 पाया गया जो की नगण्य है। इस प्रकार प्राप्त परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि प्रवाहता के मापन पर लड़के एवं लड़कियों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं था। इसी तरह लचीलेपन पर लड़कों और लड़कियों के औसत स्कोर और SDS के आधार पर दोनों के बीच अंतर नगण्य था। इससे यह निष्कर्ष निकाल गया कि लचीलेपन के माप के आधार पर लड़के व लड़कियों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मौलिकता पर लड़के व लड़कियों का औसत स्कोर क्रमशः 6.70 एवं 5.00 तथा SDS क्रमशः 8.00 और 6.25 था। t वैल्यू 2.12 जो 0.01 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है। इस आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि लड़कों की लड़कियों के तुलना में अधिक थी।

निष्कर्ष :

शोध पत्र में अध्ययन से यह निष्कर्ष मिला कि रचनात्मकता या सृजनात्मकता के विभिन्न घटकों या आयामों में से एक आयाम मौलिकता को छोड़कर शेष घटक जैसे -प्रवाहता तथा विविधता या लचीलापन लड़कों एवं लड़कियों में एक समान देखने को मिला जबकि मौलिकता का स्तर लड़कों मे लड़कियों से ज्यादा पाया गया। मौलिकता के आधार पर लड़कों ने लड़कियों की तुलना में ज्यादा अंक अर्जित किए।

यद्यपि निष्कर्ष को तार्तिक ढंग से विचार किया जाय तो हमारे समाज में लड़कियों को आगे संघर्ष करने एवं आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जबकि लड़कों के भीतर किसी समस्या के प्रति रुचि प्रकट करते हुए सक्रिय बने रहने एवं जोखिम उठाने का सामर्थ्य देखने को मिला।

सुझाव :

सभी स्तरों पर रचनात्मकता में लैंगिक अंतर की जाँच के लिए अतिरिक्त अनुसंधान की आवश्यकता है। साथ ही सृजनात्मकता को बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों को किए जाने की आवश्यकता है। ऐसे समय पर जब शिक्षा तथा कौशलों के विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है ,तब रचनात्मकता के विकास पर भी विशेष बल दिए जाने की आवश्यकता है ,इसके लिए जरूरी हो जाता है कि इसकी आवश्यकता एवं महत्व से लोगों को अवगत कराया जाय। सृजनात्मक कार्य ,जोखिम के कार्य ,कल्पना शक्ति को बढ़ावा देने वाले कार्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने से छात्रों में रचनात्मक चिंतन करने की शक्ति को बढ़ाया जा सकता है। सभी बच्चों या व्यक्तियों में विद्यमान रचनात्मक शक्ति के विकास के लिए उचित एवं अधिक से अधिक अवसर मिलना चाहिए ,साथ ही लोगों के सामाजिक ,आर्थिक ,तथा स्वास्थ्य पर भी ध्यान केंदित किए जाने की आवश्यकता है जिससे सृजनात्मकता के विकास में ये रुकावट का कार्य ना करें। इस शोध के निष्कर्ष के आधार पर आगे निम्न बिन्दुओं पर शोध किए जा सकते हैं -

- ❖ यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा 12 के छात्रों के अतितिरिक्त अन्य कक्षाओं के छात्रों पर शोध किया जा सकता है।
- ❖ यू0 पी0 बोर्ड के स्थान पर अन्य बोर्ड के छात्रों को लेकर शोध किया जा सकता है।
- ❖ यू0 पी0 बोर्ड के अलग कक्षाओ से छात्रों (लड़के ,लड़कियाँ) को लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।
- ❖ सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के अलग कक्षाओ से छात्रों (लड़के,लड़कियाँ) को लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।
- ❖ यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के कक्षाओ से छात्रों (लड़के,लड़कियाँ) को लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :

- पांडे ,राजेश कुमार.(2001).आदिवासी विद्यार्थियों मे सृजनात्मकता और मूल्यों के विकास को प्रभावित करने वाले शैक्षिक कारक का परिस्थितिकीय अध्ययन, पी0 एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र विभाग), वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल यूनिवर्सिटी जौनपुर , http:/hdl.handle.net/10603/169437 .
- तिवारी ,अर्चना.(2002). पूर्वी उत्तर प्रदेश के विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता ,अभिवृत्ति ,मूल्य ,एवं व्यक्तित्व का अध्ययन, पी0 एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र विभाग), वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल यूनिवर्सिटी जौनपुर , http:/hdl.handle.net/10603/178665 .
- सिंह,अनीता. (2002). उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी समस्या समाधान की योग्यता , बुद्धि और सामाजिक आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, पी0 एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र विभाग), वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल यूनिवर्सिटी जौनपुर , http:/hdl.handle.net/10603/182531 .
- कुमार ,अजय.(2002). माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्मबोध ,सृजनात्मकता ,एवं उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, पी0 एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र विभाग),आगरा यूनिवर्सिटी , http:/hdl.handle.net/10603/315628 .
- पाठक,पी0 डी0. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान,अग्रवाल पब्लिकैशन,पृष्ठ 594 .

- गिलफोर्ड ,जेपी.(1966).सृजनात्मकता कल आज और कल ,द जर्नल ऑफ क्रिएटिव बेहेविअर. पृष्ट 13
- सिंह,लवकुश .(2009). सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की बुद्धि ,स्मृति एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, पी0 एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र विभाग), वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल यूनिवर्सिटी जौनपुर, http:/hdl.handle.net/10603/179106 .
- गुप्ता ,एस0 पी0 .,गुप्ता ,अलका. (2017). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार ,शारदा पब्लिकेशन ,पृष्ट 602-603.
- शर्मा,एकता.,शर्मा,संदीप.(2018). शिक्षकों के लिए रचनात्मकता पोषण व्यवहार पैमाना,वॉल्यूम 32 ,अंक 6 ,इन्टर नैशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल मैनेजमेंट.